24-01-2021 को फरीदाबाद में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सब सजनों को जय सीताराम जी,

ठीक हो सारे?

'हाँ जी'।

तभी सभी के चेहरे सुन्दर लग रहे हैं। इस संदर्भ में सजनों चाहे चेहरों को सुन्दर बनाना आसान लगता है और मन को सुन्दर बनाना कठिन लगता है, पर यकीन मानो कि हक़ीकत में मन को सुन्दर बनाना इस काम से (चेहरों को सुन्दर बनाने से) ज्यादा आसान है। कहने का आशय यह है कि जिस तरह बैहरुनी वृत्ति में अपने शारीरिक अस्तित्व को महत्त्व देते हो उसी तरह अन्दरुनी वृत्ति में अन्दरुनी अस्तित्व को इससे अधिक महत्त्व दो ताकि सुरत यानि ख़्याल सदा कंचन अवस्था में सधा रहे। याद रखो सजनों यदि ख़्याल स्वच्छ है तो आप मानसिक तौर पर प्रसन्न हो। प्रसन्नता है तो स्थिरता है। सो इतनी सी क्रिया करने के लिए खुद को साधना है। इसी को सजनों साधना कहते हैं। इस विषय में जानो कि खुद को वही साध सकता है जो खुद को समझता है यानि समझदार ही स्वयं को साध सकता है। वही इस शरीर से जो भी जीवन प्रयोजन सिद्ध करने इस संसार में आया है उसको मन-चित्त लगाकर पूरा कर सकता है। उसके अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा करने में सफल नही हों सकता। सजनों यदि आप भी खुद को समझना चाहते हो और अपना जीवन प्रयोजन सिद्ध करना चाहते हो तो इस विषय में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में जो 'अलफ' से लेकर 'ये' तक की युक्ति का बखूबी वर्णन किया गया है उस युक्ति को ध्यान से समझो और स्मृति में रखकर प्रयोग में लाने का पुरुषार्थ दिखाओ। तभी सजनों अपने आपको जान सकोगे। यहाँ अपने आप को जानने का मतलब 'सर्व मैं हूँ, मैं हूँ सर्व', अपनी सर्वव्याप्त हस्ती को पहचानने से है। याद रखो सजनों जब 'मैं ही सर्व व्याप्त हूँ', यह भाव मन में बैठ जाता है तो इन्सान के लिए एकता, एक-अवस्था में रहते हुए जीवन प्रसन्नता से व्यतीत करना सहज हो जाता है। साथ-साथ उसके लिए जीवन प्रयोजन का सिद्ध करना भी सहज हो जाता है। अतः आप भी सजनों अपने जीवन को कठिन बनाने के स्थान पर इस तरह सहज व सरल बनाओ। कहने का आशय यह है कि किसी कारण भी अपना स्वभाव कठिन मत बनाओ क्योंकि कठिन स्वभाव शारीरिक स्वभाव होते हैं। यहाँ याद रखो कि हमारे भाव-स्वभाव कोमल हों क्योंकि कोमल भाव-स्वभाव ही आत्मीयता से भरपूर होते हैं। इन भाव-स्वभावों को अपनाने हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में जो युक्ति विदित है, उसे ठीक से समझते हुए उसे धारण करने में समय लगाना आवश्यक समझो। कहने का आशय यह है कि जिस प्रकार उचित युक्ति के अभाव में किसी भी सांसारिक कार्य को सिद्ध करना दुष्कर हो जाता है, उसी प्रकार यह कार्य भी युक्ति अपनाए बिना सिद्ध नहीं हो सकता। इस तथ्य से सजनों युक्ति का जो महत्त्व है उसे समझो तभी आप नीतिबद्ध चलन अपनाकर कुदरत की जो सारी व्यवस्था है, उसमें आराम से निष्पाप जीवन व्यतीत कर सकते हो। इस बात को आपने केवल सुनना ही नहीं है अपितु कार्य सिद्धि हेतु अपने आपको युक्ति के अनुसार साधना

है और नीतिबद्ध होकर परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ जाना है अन्यथा सजनों आप स्वार्थ में अटककर अपने वास्तविक उद्देश्य से भटक जाओगे और जीवन के उल्टे रास्ते पर चढ़कर अपना जीवन बर्बाद कर बैठोगे। ऐसा न हो इस हेतु जैसे पहले भी कहा है कि 'सर्व मैं हूँ, मैं ही सर्व हूँ' इस कथन के अनुसार खुद को सृष्टि की एकरूपता में स्थापित कर देना है ताकि परस्पर आत्मीयता का सम्बन्ध बन जाये। याद रखो यदि इन्सान ऐसा नहीं करता तो वह अनेक रूपता में भटक जाता है। नतीज़ा तेरी-मेरी आदि का सवाल पैदा हो जाता है और पारस्परिक द्वि-द्वेष पनप जाता है। इस तरह सजनों मन में अनगिनत विकार पैदा हो जाते हैं जो लड़ाई-झगड़े व नाना प्रकार के दुःखों का कारण बनते हैं। यह अच्छा चलन नहीं कहलाता जबकि सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि अच्छे बनो। अच्छे बनने के लिये आपको एकरूपता के भाव से युक्त होना ही होगा। इसके बगैर अन्य कोई रास्ता नहीं है। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप क्या करना चाहते हो और क्या नहीं करना चाहते। इस विषय में हम तो यहीं कहेंगे कि परमार्थ के रास्ते पर चलते हुए न केवल खुद अध्यात्म हो जाओ अपितु अपने परिवारजनों व बच्चों को भी इसी रास्ते पर आगे बढ़ाओ। तभी जीवन की वास्तविकता आपको समझ आयेगी और वास्तविक रूप से जीवन जीते हुए खुशहाल रह सकोगे व जीवन का वास्तविक आनन्द उठा सकोगे अन्यथा जीवन में रोने-झुखने के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह जायेगा। इस परिप्रेक्ष्य में हम तो यही कहेंगे कि आप ऐसे समझदार बनो जैसा कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ चाह रहा है। जानो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ यही चाह रहा है कि आप अच्छे और नेक इन्सान बनकर इन्सानियत में आ जाओ। इस तथ्य से स्पष्टतः जाहिर होता है कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हक़ीकत में हमें सम्भालने की कोशिश कर रहा है और इस हेतु सम्भलने के प्रति जाग्रत कर रहा है। अतः सजनों यदि हम यह बात जानकर जागृति में आ जाते हैं और इसके प्रति जो विचार इस कुदरती ग्रन्थ में विदित हैं उन विचारों को धारणकर तद्नुकूल अपना व्यावहारिक रूप बना लेते हैं तो मानो कि हम अच्छे व नेक इन्सान बनने में सफल हैं अन्यथा तो हम हारे हुए हैं। इस विषय में सजनों जानो कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

'जन्म दी बाज़ी जित चाहे हार, फिर जीत-हार है तेरे हाथ।'

अर्थात अच्छा इन्सान बनकर जन्म की बाज़ी जीतना या हारना इन्सान के अपने हाथ में है अतैव सजनों यदि विजय चाहते हो तो जिस प्रकार अन्य कार्यों को पूरा करने में समय लगाते हो और अपना भरण पोषण कर व्यर्थ के झंझटों से बचने का यत्न करते हो, उसी प्रकार सन्तोष अवस्था में आने के लिए नाम-अक्षर चलाने की, तीन यज्ञों को निर्विघ्न समाप्त करने की यानि परमार्थ के रास्ते पर स्थिरता से बने रहने हेतु जो निर्धारित समय लिखित में है, उसे उसी काम में ही लगाओ। आशय यह है कि किसी भी कारणवश उसे अन्य कामों में और व्यर्थ की बातों में न लगाओ अपितु जीवन की हर परिस्थिति में परमार्थ को महत्त्व देना सीखो व इसी में ही अक्लमन्दी मानो। सजनों इस बात को समझो और यदि आप अपने परिवार के सजन हो तो कहना मानकर जो समय युक्ति अनुसार परमार्थ के लिए निर्धारित है, उसे समयबद्ध उसी में ही लगाओ। फिर चाहे कुछ भी हो जाये उस समय को आगे-पीछे न करो यानि इस तरह मज़बूत हो जाओ कि घर के सदस्य अपने आप ही समझ जायें कि

अक्षर नाम चलाना, ध्यान-स्थिर रहना व अपने यथार्थ स्वरूप में बने रहना इस सजन की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। यकीन मानो कि अगर इन्सान जीवन की इस आवश्यकता को पूरा कर लेता है तो मन प्रसन्न होकर सध जाता है क्योंकि अक्लमन्द का कहना मानना सब उचित समझते हैं। इसके विपरीत यदि आप अव्यवस्थित रहते हो और नीति-नियम छोड़ बैठते हो तो यह अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारने की बात होती है। हम पूछते हैं कि क्या इसका दर्द भी आपको महसूस नहीं होता? याद रखो यही दर्द दुःख-सुख में बदल-बदलकर आपके सामने आता है। कहने का आशय यह है कि जीवन में आने वाले यह दुःख-सुख आपको समझाने व सम्भालने के लिये होता है। अतः बात की गम्भीरता को समझते हुए आप यह निश्चय लो कि आज और अभी से मैं जो भी द्वारे की नीतियाँ हैं उनको दिलचस्पी में आकर पढ़ूँगा और समझूँगा व समझदारी से ही उनके अनुरूप वांछित क्रिया करूँगा। तभी आप विजयी व चेतन कहला सकोगे अन्यथा आप अचेतन कहलाओगे और आपका कहना न तो आपका मन मानेगा और न ही कोई और मानेगा। इस तरह आपकी बुद्धि को मन हर लेगा और मनुराज में ले जायेगा। ऐसा होने पर आपका सब कुछ बदल जायेगा क्योंकि आपका मालिक-पालक सब बदल जायेगा। ऐसे में आप सतवादी कैसे बने रह पाओगे? कैसे आपके अन्दर सत्य की प्रधानता बनी रह पायेगी? रजोगुण और तमोगुण तब आपके दिल-दिमाग़ पर हावी होंगे ही होंगे। इस तरह आपका आहार, आचार व व्यवहार सब अहंकारयुक्त व विकारयुक्त होकर मलिन हो जायेगा और बुराई की ओर प्रशस्त होकर बुरा सोचोगे, बुरा बोलोगे और बुरा ही करोगे। आशय यह है कि बुरा करने की आदत आपके स्वभाव के अन्तर्गत हो जायेगी। इस तथ्य से सजनों ज्ञात होता है कि एक दफा यदि बुद्धि मनुराज में फँस जाती है तो उसको वहाँ से निकालना फिर आसान काम नहीं रहता। इस हेतु तो पूरे आत्म-विश्वास के साथ खुद को साधना पड़ता है यानि यह मानना होता है कि मैं सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार अपने ख़्याल को मनुराज से निकालकर परमपिता परमेश्वर के संग जोड़ने में सक्षम हूँ। सारतः बात यही है कि युक्ति को समझना है और युक्ति अनुसार नीतिबद्ध क्रिया करने के लिये समय लगाना है। ऐसा करने हेतु सजनों एकान्त में बैठकर नीतियों को पढ़ो और उन नीतियों अनुसार अपना गृहस्थ आश्रम तो ठीक से चलाओ ही, साथ ही उन रीतियों-नीतियों के अनुसार अपना परम हित सिद्ध करने के प्रति भी दृढ़ बने रहो ताकि घर सतयुग बन जाये और आप सतयुग में प्रवेश कर जाओ। हमें समझ नहीं आता कि ऐसा करने में आपको कहाँ कठिनाई आती है? याद रखो कठिनाई केवल हमारी सोच में है, हमारे नज़रिये में है यानि जिस नज़रिये से हमने जीना आरम्भ कर दिया है या जो माता-पिता बुज़ुर्गों द्वारा हमें भौतिक-ज्ञान अनुसार जीवन जीने का तरीका सिखाया गया है, हम उस त्रुटिपूर्ण नज़रिये को लेकर ही इस जगत में विचर रहे हैं और उस बोझ से उठ नहीं पा रहे हैं। इससे उठने हेतु सजनों आत्मिक-ज्ञान प्राप्ति को महत्त्व दो यानि मानसिक तौर पर मान लो कि यह जो सृष्टि है इसमें जितने भी रूप नज़र आते हैं वे सब यथार्थतया एकरूप हैं। उस एकरूपता में खुद को इस तरह मज़बूती से स्थापित कर दो कि आपको कोई उलझा न सके और ए विध् एकरूपता का भाव आपके मन से कदापि किसी कारण भी कमज़ोर न पड़े। यकीन मानो यदि इतना ही कर लेते हो तो फिर आप सांसारिक सम्बन्धों से आज़ाद हो, कभी भी किसी का नुक्सान नहीं कर सकते क्योंकि आपके लिये सब बराबर यानि समतुल्य/एक समान हो जायेंगे। फिर आपका सुख

दूसरों का सुख और दूसरों का दुःख आपका दुःख हो जायेगा। इस तरह मानव-धर्म अनुसार आचरण करना आरम्भ कर दोगे। सजनों यदि मानसिक तौर पर ऐसे बन गये तो फिर समझ लेना कि आपका काम बन गया यानि आप समभाव नज़रों में कर समदृष्टिता अनुरूप सजन भाव का व्यवहार करने में कमज़ोर नहीं पड़ सकोगे। आशय यह है कि ईश्वर की एकरूपता का व उसके ज्योति-स्वरूप पारब्रह्म परमेश्वर का अनुभव करो तभी आप विजयी हो सकोगे।

इसी बात को सजनों अब अन्य शब्दों में समझो और मानो कि ईश्वर ने आपको इस संसार में यह मानव चोला देकर भेजा और कहा कि जाओ मृतलोक पर फतह पाकर आओ। अब प्रश्न यह उठता है कि मृतलोक पर फतह कैसे पाएँ? जानो यह तभी कर पाओगे जब अन्दर सजनता का भाव सुदृढ़ होगा। आशय यह है कि इस युद्ध-क्षेत्र में एक तरफ तो मृतलोक है और दूसरी तरफ हम स्वयं हैं यानि जो सर्व है वही मैं हूँ जो सबसे शक्तिशाली है। आपका लक्ष्य है इस मृतलोक के साथ युद्ध कर इस पर फतह पानी है। ऐसे में सजनों मृतलोक में ही फँस गये यानि उसके धन्धों मे ही दिमाग़ को उलझा दिया तो आप कैसे युद्ध करने के लायक रहोगे? आप तो इसके आगे हथियार डाल दोगे और अपना बचाव नहीं कर पाओगे। फिर जो इस मृतलोक की भौतिक-व्यवस्था है वह आपको अपने मुताबिक नचायेगी। तो क्या इस लड़ाई में हारना चाहते हो?

'नहीं जी'।

फिर मेहनत तो करनी ही पड़ेगी अन्यथा जो अब आपका हाल है वही रहेगा। आशय यह है कि जिससे युद्ध कर रहे हो उसी के ही होकर रह जाओगे और अपने आध्यात्मिक अस्तित्व को खो बैठोगे। ऐसे में आप में क्या जान बाकी रहेगी। इसीलिए तो अभी जो नाच यह जगत आपको नचा रहा है वही नाच आप नाच रहे हो। इस स्थिति से उबरने हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का अध्ययन करो। जानो इस ग्रथ में इस युद्ध मे विजयी होने के लिए कैसी मानसिक स्थिरता चाहिए उसका वर्णन है। साथ ही इसमें यह भी विदित है कि जीवन विजयी होने के लिए हमारा आत्म-विश्वास कितना सबल होना चाहिये ताकि हम आत्म निर्भर होकर यानि आत्मिक-ज्ञान प्राप्त करके अपने कार्य सिद्ध करने के काबिल बन सकें और हमें किसी अन्य की मदद की जरूरत न रहे। याद रखो सजनों इस कार्य में आपकी मदद कोई नहीं कर सकता अपितु इस हेतु तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार सबके साथ सजनता का नाता बनाने की आवश्यकता है। अतः अन्य संसारी बातों में मत उलझो और सबसे मैत्री-भाव से विचरो। जानो ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि एक मित्र अपने मित्र के लिए जान भी कुर्बान कर सकता है। आप भी अपने मानव धर्म पर स्थिर रहने के लिए कुछ भी वारने से न सकुचाओ तभी आप लाभान्वित हो सकोगे। इस सन्दर्भ में सभी अपनी जाँचना करो कि जिस प्रकार बच्चा हर वर्ष भौतिक ज्ञान प्राप्त कर नई क्लास चढ़ता है, तो क्या हम उसी प्रकार आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर आगे

बढ़ पा रहे हैं? हम पूछते हैं कि क्या कभी इस विषय में अपना आत्म-निरीक्षण किया है और यह जानने का यत्न किया है कि मैं सत्संग के नीति-नियमों पर कितना मज़बूत हूँ?

'मौन।

सजनों यदि आत्म-निरीक्षण ही नहीं करोगे तो अपनी कमज़ोरियाँ ढूँढकर कैसे मज़बूत होवोगे? अतः समय-समय पर अपना आत्म-निरीक्षण करो। सारी पुस्तकें आपके पास हैं। जानो 'अलफ़' की रटन लगाने का अपना महत्त्व है और 'ये' की रटन लगाने का अपना महत्त्व है। 'अलफ़' से पढ़ाई शुरु होती है और 'ये' पर समाप्त हो जाती है। इस पढ़ाई को करने पर ही आप इन्सान कहलाने के काबिल बन सकते हो वर्ना जो आज का समय है वह बहुत कठिन है। ऐसे में कोई विरला ही यत्न लड़ाकर जीवन बनाने का अपना कार्य निश्चित समय/अवधि में सिद्ध कर पायेगा। अब यह बताओ कि आत्मिक-ज्ञान की पढ़ाई कितने साल की है?

'दो साल' की।

और उस पढ़ाई को व्यावहारिक रूप देने के लिए गुढ़ाई कितने वर्ष की है?

'पाँच साल की'।

तो हमने यह कार्य निश्चित समय में पूरा क्यों नहीं किया?

'मौन'।

ऐसे में क्या हम इस 'द्वारे' के कहलाने के योग्य हैं? क्या जो कार्य हमें समयबद्ध समाप्त कर अध्यात्म बन जाना चाहिये था, उस कार्य को करने में कमज़ोर पड़कर हम इन्सान कहलाने के लायक रहे हैं? सजनों यह तो चौरासी लाख योनियों में बने रहने की बात है। तो क्या यह लाभकारी बात है?

'नहीं जी'

तो फिर अपने साथ क्यों ऐसा होने दे रहे हो? आपको समय-समय पर चेतावनी भी मिल रही है, रास्ता भी मिल रहा है पर चलना तो खुद को ही है न। आज यह हमें सख़्ती से इसलिए कहना पड़ रहा है क्योंकि चालीस दिन का यह यज्ञ अपने आप में इतना महत्त्व रखता है कि इन्सान के अन्दर परिपूर्ण बदलाव आ सकता है यानि अगर कोई शत-प्रतिशत इस यज्ञ की रीतियों के अनुसार अपने ख़्याल को साधे रखता है तो निश्चित रूप से वह अपना स्वाभाविक रूप परिवर्तित कर अच्छा इन्सान बन सकता है। सजनों यहाँ ख़्याल को साधे रखने का मतलब है कि न तो किसी के लिए फुरना बनो और न ही किसी का फुरना धारण करो। यहाँ अफसोस की बात तो यह है कि दूसरों की बात अन्दर लेकर चलने की हमारी आदत छूटती क्यों नहीं है? हम फिर कह रहे हैं कि बात को

समझो और दुनियाँ को मत देखो यानि दुनियाँ में क्या हो रहा है उसको मत अपनाओ अपितु खुद को देखो, खुद को पहचानो और सर्व हित की खातिर खुद के लिए क्या करना बनता है, उसके प्रति जाग्रत रहो। इसमें भूल मत करो और किसी का अहित न करो। इस विचार पर मज़बूती से पकड़ रखो कि मुझसे कोई भूल न हो जाये और मेरे कारण किसी का अहित न हो जाये। इस हेतु आज ही रीतियों और नीतियों की किताबें अपने आगे रखकर अपना-अपना व्यक्तिगत स्तर पर आत्म-निरीक्षण करो। यह सब इकट्ठे बैठकर नहीं करना अपितु व्यक्तिगत स्तर पर अपना जायज़ा लेना है कि आप द्वारे की नीतिओं के प्रति कितने मज़बूत हो? इस सन्दर्भ में जितनी भी अपनी कमजोरियाँ नज़र आएँ तो मान लेना कि वे कमज़ोरियाँ आपकी बुरी सोच का कारण हैं व आपसी मन-मुटाव का कारण हैं। इस तरह सजनों यदि खुद को सुधार लेते हो तो आपसी सम्बन्ध आत्मीयता का बन सकता है और आप मृतलोक से स्वतन्त्रता पा सकते हो। याद रखो आपका रास्ता सच्चाई-धर्म का है। क्या हुआ अगर इस रास्ते पर गिने-चुने लोग ही चलते हों, आप भी इन गिने-चुनों में सम्मिलित हो जाओ। अतैव मानो कि जिस संसारी भीड़ में आप जा रहे हो उसमें तो कहीं नज़र ही नहीं आओगे और न ही किसी गिनती में आओगे परन्तु अगर परमार्थ के रास्ते पर चलने वाले गिने-चुने लोगों में होवोगे तो आपकी शान बढ़ेगी। सजनों इस शान को प्राप्त करना चाहते हो?

'करना चाहते हैं जी'।

करना चाहते हो तो सब पारिवारिक सदस्य व्यक्तिगत स्तर पर अपना आत्म-निरीक्षण करना और अपना-अपना परिणाम लेना। इससे सबको अपने-अपने अलग-अलग दुर्भाव नज़र आयेंगे। इन दुर्भावों को ही सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित युक्ति अनुसार सद्भावों में तबदील करना है। यकीन मानो अगर आप इतना ही कर लेते हो तो आप अखण्ड हवन तक जीवन बनाने के प्रति कुछ तैयार हो सकते हो। यदि फिर आपके अन्दर भरपूर लगन हुई और आपने भरसक पुरुषार्थ दिखाया तो चैत्र के यज्ञ तक अवश्य ही अपना जीवन कारज सिद्ध कर सकोगे और सजन पुरुष कहलाने के काबिल बन जाओगे। आगे जैसा कि आपको पता ही है कि कलियुग समाप्त हो रहा है और सतयुग आ रहा है। जानो सतयुग में भीड़ नहीं होती इसलिए सतयुग आने से पहले कुदरत के नियमों अनुसार चौरासी को जीवन बनाने का मौका मिलता है। तभी आप देखते हो कि सतयुग में जिस जीव की उम्र लाखों वर्ष होती है, वह सौ वर्ष तक ही सीमित रह जाती है। इसलिए इस समय में जीव आते हैं और शीघ्र ही चले जाते हैं ताकि किसी को यह कहने का मौका न मिले कि मुझे जीवन बनाने का अवसर ही नहीं मिला। इससे स्पष्ट होता है कि कुदरत अपने नियमों पर अटल है और इन्हीं नियमों के अनुसार वह सबको एक बार जीवन बनाने का अवसर अवश्य देती है। अगर आप चाहो तो अपने जीवनकाल में अमरता को प्राप्त हो सकते हो और चौरासी से आज़ाद होकर मृतलोक पर फतह पा सकते हो। जानो सजनों अगर आप अमरता को प्राप्त कर ऐसा कर लेते हो तो ही आप अपने सजन कहला सकते हो अन्यथा तो यह अपने साथ वैर कमाने की बात है। इस सन्दर्भ में सजनों आज सब

देखना कि आपकी कमाई कितनी खोटी है व कितनी खरी है? इस तरह अपनी खोटी कमाई को परखकर उसको साफ करना क्योंकि सच्चेपातशाह जी कहते हैंः-

'ख़ोट न राहवे इस बदन में तां मैं अपना आप पहचाना'

अन्ततः सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द विचारों को ध्यान से पढ़ो, समझो व चिन्तन और मनन द्वारा व्यवहार में लाओ। यूं ही सोचों में मत डूबे रहो और न ही अपनी बुराईयों को देखकर घबराओ क्योंकि हमने ऊपर उठना है और ताकत में आना है ताकि हम अखण्ड हवन तक स्वयं में आपेक्षित बदलाव ले आयें। हो सकता है कि दुनियाँ में उलझे होने के कारण ऐसा करने में आपके परिवारों के मुखिया हार खा जायें परन्तु आप जो अभी युवा अवस्था में हो, आपको उन उलझनों से अपना बचाव करना है। इसके लिए व्यक्तिगत स्तर पर ऊपर उठना है और मज़बूत होना है। इस तरह अपनी मज़बूती से अपने-अपने घर वालों को यह सन्देश देना है कि अगर इन्सान चाहे तो वह संसार से ऊपर उठकर सुगमता से जीवन जी सकता है। कहने का आशय यह है कि घर वालों के पीछे नहीं लगना अपितु सद्मार्ग पर चलकर उनको उस सद्मार्ग पर चलने का रास्ता दिखाना है। यह तो हक़ीकत में सजनों घर के बड़ों को इज्ज़त देने की बात होगी और जो संसार में उलझा हुआ है उसके सामने अपने मन-वचन-कर्म द्वारा अध्यात्म का प्रदर्शन करके उसको सम्भालने की यानि उसके अन्दर भी परमार्थ के रास्ते पर चलने की उमंग पैदा करने की बात होगी। इस तरह उपकार के साथ-साथ यह परोपकार भी हो जायेगा। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों सबने यह कार्य निष्कामता से करना है और अपनी अक्ल के प्रयोग द्वारा न केवल स्वयं को अपितु अन्य जो परमार्थ की तरफ से सोए पड़े हैं, उन सजनों को भी उठाना है। फिर एक महीने बाद हमें सभा की सामूहिक उन्नति का जायज़ा देना है ताकि सब एक रंग में रंग जायें, सबकी एक बात, एक विचार हो जाये और पारस्परिक कोई भिन्न-भेद न रहे।

आप सब ऐसा करने में कामयाब हो इन्ही शुभकामनाओं के साथ सभी सजनों को जय सीताराम जी।